'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2013-15
WPP Licence No.- U(C)-101/2013-15
R.N.I. No. 68180/98

Date of Publication : 15.03.2015
Date of Posting on concessional rate : 2-3 & 16-17 of each fortnight

मूल्य : पाँच रुपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन – जस्टिस पब्लिकेशंस, टी–22, अतुल ग्रोव रोड, क्नॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001, फोन : 23354841–42

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

● वर्ष : 18 ● अंक 10 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● 1 से 15 अप्रैल, 2015

"हिन्दुस्तान" में 14 अप्रैल, 2015 को प्रकाशित लेख

अम्बेडकरवाद एवं राष्ट्रीयता

डॉ. उदित राज

कुछ लोग अपने जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त कर लेते हैं, तो कुछ लोग मरणोपरांत। ऐसे भी महापुरूष होते हैं जो अपने जीवन और मरणोपरांत दोनो में प्रसिद्धि बनी रहती है। डॉ0 अम्बेडकर अपने जीवन में बहुत ज्यादा प्रसिद्धि नहीं ले पाए, लेकिन धीरे-धीरे इतना अधिक उनका कद बढ़ता जा रहा है, कि कुछ समय पहले सोचना मुश्किल था। बीते काल में महापुरुषों के अमर होने की अवधि भले बहुत लंबी रही हो, लेकिन भविष्य में मूल्यांकन काम और विचार के आधार पर ही होने वाला है। संचार की दुनिया में क्रांति आने के बाद किसी को भ्रम नहीं होना चाहिए कि वे अपने प्रचार तंत्र के बल पर आगे भी कामयाब होते रहेगें। जब तक संचार पर नियंत्रण अभिजात्य वर्ग एवं सरकार का था, तब तक यह संभव था कि रेड़ को महापुरुष बनाना और महापुरुष को रेड़, लेकिन अब ऐसा होने वाला नहीं है।

आउटलुक पत्रिका, सी. एन.एन.आई.बी.एन एवं निल्सन ने अगस्त–सितंबर 2012 में सर्वेक्षण कराया कि गांधी के बाद कौन महानतम भारतीय है। चयन की प्रक्रिया तीन चरणों में थी – मतदान, सर्वे एवं बुद्धिजीवी समूह की राय। तीन चरण में जूरी, जिसमें 28 भारतीय प्रबुद्ध थे, ऑनलाइन मतदान एवं मिस्ड कॉल, मार्केटिंग रिसर्च आदि के सर्वेक्षण ने महानतम भारतीय की फाइनल रैंकिंग में डॉ0 अम्बेडकर प्रथम स्थान पर रहे। डॉ0 अम्बेडकर को इंटरनेट एवं मिस्ड काल से मिले मत 19,91,734 थे जबकि जवाहर लाल नेहरू के पक्ष में 9,921, लता मंगेश्कर के पक्ष में 11,520, बल्लभ भाई पटेल के लिए 5,58,835 । इस तरह से डॉ0 अब्दुल कलाम, मदर टेरेसा, जी. आर.डी. टाटा, सचिन तेंदुलकर, इंदिरा गांधी आदि भी इस दस की प्रतिस्पर्धा में थे जो सभी डॉ0 अम्बेडकर से बहुत पीछे थे। जिस दिन सी.एन.एन. एन.आई.बी.एन. ने परिणाम घोषित किया, टिप्पणीकार एवं अतिथि के रुप में राजदीप सरदेसाई ने अमिताभ बच्चन जैसे लोगों को बुलाया, जो सही मूल्यांकन नहीं कर सके। कम से कम एक पढ़े-लिखे दलित को ही बुला लेते तो वह भी डॉ0 अम्बेडकर को विजेता घोषित होने के उपलक्ष्य पर उनके सही योगदान को बता तो सकता। इसमें अमिताभ बच्चन का दोष नहीं है, क्योंकि वे दलित आंदोलन को न पढ़े थे और न ही उसमें भाग लिए, जो उनकी समझ में आया कहा। पूर्वाग्रह इस हद तक है कि इस अवसर पर डॉ0 अम्बेडकर के अनुयायी को बुलाने में भी जोर पड़ा। सभी ने कहा कि उन्होंने भारतीय संविधान लिखा और वह सबसे बड़ा योगदान है, जबकि यह सच नहीं है। सबसे बड़ा योगदान डॉ0 अम्बेडकर का दलितों को गुलामी से आज़ाद कराना एवं समतामूलक समाज का संघर्ष रहा है। इसको न तो अन्य इलैक्ट्रानिक चैनलों ने कवर किया और न ही न्यूजपेपर ने, अगर किया भी तो नहीं के बराबर जिससे दलितों में भारी आक्रोश पैदा हुआ।

डॉ0 अम्बेडकर का व्यक्तित्व इस समय ऐसा हो गया है कि शायद ही कोई शहर या गांव होगा, जहां जन्मदिन न मनाया जाता हो। अब सरकार भी प्रोत्साहित करने लगी है, वरना कुछ समय पहले उनके आंदोलन के कारण जिन्हें सम्मान की जिंदगी मिली थी, वहीं किया करते थे। एक अच्छी बात है कि अब गैर दलित भी ऐसे कार्यक्रम करने लगे हैं। अब डॉ0 अम्बेडकर के अनुयायी अपेक्षा भी करने लगे हैं कि दूसरे समाज के लोगों को भी इन्हें सम्मान दिया जाना चाहिए। ऐसा न करने की स्थिति में प्रतिशोध की भावना पैदा हो रही है। इसे रोकना पड़ेगा वरना ऐसी स्थिति पैदा हो जाएगी कि जिस जाति में महापुरुष ने जन्म लिया है, वही लोग कार्यक्रम किया करेगें।

डॉ0 अम्बेडकर का अभी भी मूल्यांकन सही नहीं हो पाया है, अधिकतर गैर दलित यह सोचते हैं कि उन्होंने अछूतों के लिए मूल रुप से संघर्ष किया है, जबकि ऐसा नहीं है। 1951 में कानून मंत्री के पद से डॉ0 अम्बेडकर ने त्यागपत्र दलित के सवाल पर नहीं दिया था, बल्कि महिलाओं को सम्पत्ति में बराबर का अधिकार के मुद्दे पर। हुआ यह था कि नेहरूजी से मसविरा करके हिन्दू कोडबिल पेश किया, जिसमें सम्पत्ति में महिला और पुरुष दोनो का बराबर अधिकार का प्रावधान था। तमाम सांसदों ने जब इसका विरोध किया तो नेहरूजी समर्थन वापिस ले लिए और ऐसी स्थिति में बिल पास होने का कोई मतलब ही नहीं होता? जब बिल पास नहीं हो सका, तब डॉ0 अम्बेडकर बहुत ही आहत हुए और कानून मंत्री के पद से त्यागपत्र दे दिया। क्या स्त्रीवाद की वकालत करने वाली महिलाओं ने डॉ0 अम्बेडकर के साथ न्याय किया? जो लोग लिंग समानता की बात करते नहीं थकते, क्या वे कभी इसकी चर्चा करते हैं? दलित महिलाओं को तो कुछ पता भी है, सवर्ण महिलाओं को तो नहीं के बराबर। तमाम गैर दलित शिक्षित महिलाओं से जब मैंने चर्चा की तो वे बिलकुल अनभिज्ञ निकली। यहां पर डॉ0 अम्बेडकर के साथ न्याय होता नहीं दिखता, लेकिन यह सच बहुत दिनों तक छुपने वाला नहीं है।

रामलीला मैदान में अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जब आंदोलन चलाया, तो सर्वाधिक नारा 'भारत माता की जय' वहीं से गूंजा। यह अच्छी बात थी। ऐसा भी नहीं है कि पहले नहीं यह नारा लगता था। दलित सभाओं में भारत माता की जय के नारे नहीं लगते लगते हैं, तो मैं सोचने लगा कि क्या कोई गलती तो नहीं हो रही है? अगर ऐसा है तो ठीक किया जा सकता है। कुछ और लोग भी सोचते होगें कि ये दलित 'जय भीम' 'जय भारत' का नारा तो लगाते हैं लेकिन 'भारत माता की जय', क्यों नहीं। वास्तव में चाहे 'जय भारत' हो या 'भारत माता की जय' भावार्थ दोनो एक ही है। सामाजिक न्याय की ताकतें अपने अधिकार की बात करती हैं तो वह शुद्ध राष्ट्रवाद है। इससे देश की एकता और अखंडता कहीं ज्यादा सुदृढ़ होती है। आजादी के पहले देश अक्सर गुलाम हुआ करता था और हमलावरों को जीतने में बड़ी मुश्किल नहीं होती थी। सबसे बड़ा कारण यह था कि भारत हजारों जातियों में बंटा हुआ था और प्रत्येक जाति की सोच यही थी कि वह अपने पेशे तक ही सीमित रहे। चमार है तो चमड़े का काम करे, नाई बाल काटे, धोबी कपड़ा धोए, खटीक सब्जी और सुअर पालन करे, देश में कोई आए या जाए उससे क्या मतलब? एक जाति की ही जिम्मेदारी थी, शासन प्रशासन और देश की रक्षा करना। उनकी जाति की संख्या कम होना तो हार का कारण हुआ ही करता था और हमलावरों ने रणनीति के तहत और जातियों को मिला लेते थे, वे या तो उदासीन हो जाते थे या हमलावरों के साथ। अतः जातिवाद ने देश को गुलाम बनाया। जनतंत्र और आरक्षण की वजह से दोनो लिंगों और लगभग सभी जातियों की कम या ज्यादा भागीदारी शासन-प्रशासन में सुनिश्चित हुई, जिसकी वजह से अब देश में कोई आए या जाए सबका सरोकार बन गया है और कोई गुलाम बनाने का सोच भी नहीं सकता। अम्बेडकरवाद, सामाजिक न्याय, सम्मान एवं भागीदारी है और वह राष्ट्रीय एकता और अखंडता का ही पर्याय है।

+++

नेशनल एस.सी. एस.टी. ओबीसी. स्टूडेंट एण्ड यूथ फ्रंट का हरदोई जिला सम्मेलन संपन्न

हरदोई, 8 अप्रैल, 2015। नेशनल एस.सी., एस.टी, ओबीसी स्टूडेंट एण्ड यूथ फ्रंट (नसोसवायएफ) का बुधवार को गांधी भवन में जिला सम्मेलन आयोजित किया गया। परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष व नसोसवायएफ के मुख्य मार्गदर्शक सांसद डॉ. उदित राज ने कहा कि प्रदेश में पार्टियों ने जातिवाद फैलाकर शासन किया। बहुजन समाज पार्टी और समाजवादी पार्टी ने चुनाव के दौरान दलित, मुस्लिम तथा पिछड़ों को बांटकर उनके वोट लिए लेकिन उनके उत्थान के लिए कुछ नहीं किया। उन्होंने कहा कि देश में गिरावट आ रही है जिसमें बदलाव की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि नसोसवायएफ की आवश्यकता इस लिए पड़ी कि देश भर में विश्वविद्यालय, कॉलेज, स्कूल एवं अन्य संस्थानों में समतामूलक सोच के छात्रों का संगठन नहीं है। पठन-पाठन में उन्हीं को पढ़ाया जाता है जो व्यवस्था के पोषक हैं। इन वर्गों के छात्रों को भी वही विचारधारा पिलाई जाती है, जो खिलाफ में है। विद्यार्थी जीवन में बहुत ही कम होते हैं, जो सच्चाई से अवगत होते हैं। अध्ययन खत्म होने के बाद नौकरी में हों या अन्य स्थानों पर, तब जाकर कुछ को सामाजिक न्याय, समानता, मानवता, व्यक्ति की अपनी आज़ादी, महिलाओं का शोषण, समझ में आता है। अगर अन्य छात्र संगठनों की तरह नसोसवायएफ भी पूरे देश में स्थापित हो जाए तो देश की लगभग आधी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। नसोसवाईएफ के कार्यकर्त्ताओं को सलाह है कि वे संदेश दें कि पढ़ाई के साथ लड़ाई में अगर भाग नहीं लिए तो अध्ययन के बाद कहां जाएंगें? इसलिए पढ़ाई के साथ लड़ाई करना जरूरी है। निजी क्षेत्र में आरक्षण अगर नहीं मिला तो चाहे जितना पढ़ लें या कोचिंग कर लें नौकरियां तो उतनी ही रहेगें बल्कि कम होती जाएंगीं। इसलिए नसोसवाईएफ नहीं तो पढ़ाई का भी मकसद अधूरा।

डॉ. उदित राज जी ने बताया की संगठन सामाजिक और सांस्कृतिक है जिसमें महिलाओं और दलितों के सशक्तिकरण पर जोर दिया जाएगा। संगठन के माध्यम से गरीबों व विद्यार्थियों के हक की लड़ाई को लड़ा जाएगा। कालेज और महाविद्यालय तथा आईटीआई की शाखाओं में नसोसवायएफ की शाखाएं खोली गई है। देश की शिक्षा व्यवस्था का उल्लेख करते हुए कहा कि विद्यालयों में ऐसा पाठ्यक्रम पढ़ाया जाए जो जीवन, देश व सोच को बदले, लेकिन विद्यालयों में ऐसी जानकारियां नहीं दी जा रही है। देश की शिक्षा प्रणाली में बदलाव होना चाहिए।

हरदोई आगमन पर डॉ0 उदित राज का फूलमालाओं से स्वागत करते हुए उत्तर प्रदेश समन्वयक नरेश राज व अन्य नसोसवायएफ के पदाधिकारी

डॉ. उदित राज ने बताया की आज भी बहुत से महाविद्यालयों में सख्ती से शिक्षा फीस, परीक्षा फीस मनमानी तौर पर छात्रों से वसूल की जा रही है। और यही महाविद्यालय फिर से छात्रवृत्ति के माध्यम से भी फीस लेते हैं। ये महाविद्यालय दूसरी तरह फीस वसूल कर रहे हैं।

दलित-आदिवासी छात्र का एक मात्र विकास का माध्यम शिक्षा है। प्रदेश में दलित - आदिवासी छात्र सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं मगर वहां भी आठवीं कक्षा तक पास करने का जो आदेश निकाला उसे सरकारी स्कूलों में छात्रों को ठीक से पढ़ाया नहीं जा रहा है और छात्र ठीक से पढ़ाई करते भी नहीं, इससे इन छात्रों के भविष्य की समस्या बन चुकी है।

+++

निजी क्षेत्र के 42 फीसद कर्मी अवसाद के शिकार

नई दिल्ली, : काम, काम और काम बिल्कुल नहीं आराम। निजी क्षेत्र में काम कर रहे कर्मचारियों के लिए यह फलसफा उनके शरीर में घुन की तरह सेंध लगा रहा है। विश्व स्वास्थ्य दिवस की पूर्व संध्या उद्योग चैंबर एसोचैम ने चौका देने वाली रिपोर्ट जारी की है। यह कहती है कि भारत में निजी क्षेत्र के करीब 42.5 फीसद कर्मचारी अवसादग्रस्त है। इसका कारण अत्यधिक दबाव, कठिन लक्ष्य और प्रदर्शन से जुडे मुश्किल मानक है। इसने कर्मचारियों की नींद उड़ा रखी है। वे काफी कम सोते है। अवसाद या सामान्य दुष्चिंता विकार से पीड़ित कॉरपोरेट कर्मचारियों की सबसे बड़ी संख्या दिल्ली में है।

रिपोर्ट कहती है कि देश की राजधानी के बाद ऐसा कर्मचारियों की सबसे बड़ी तादाद बेंगलुरू, मुंबई, अहमदाबाद, चंडीगढ़, हैदराबाद और पुणे में है। यह रिपोर्ट 1,250 कॉरपोरेट कर्मचारियों की राय पर आधारित है। इसमें 18 प्रमुख सेक्टरों को 150 कंपनियों का हिस्सा बनाया गया। इन सेक्टरों में आइटी, वित्तीय सेवा, इंजीनियरिंग टेलीकॉम, एफएमसीजी, रीयल एस्टेट, इंफ्रास्ट्रक्चर, मीडिया, टेलीकॉम, शिक्षा, मैन्यूफैक्चरिंग और विज्ञापन शामिल है। अवसाद के शिकर सर्वाधिक 17 फीसद कर्मचारी आइटी सेक्टर में हैं। एसोचैम के महासचिव डीएम रावत कहते है कि कॉरपोरेट कर्मचारियों को नौकरी बचाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर के प्रतिस्पर्धा माहौल में काम करना पड़ता है। इसका सेहत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

+++

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ की अपील है कि अनुसूचित जाति/जन जाति कर्मचारियों को अपने काम को पूरी गंभीरता से करना चाहिए। तमाम नेतागिरी और संगठन हैं, वे अपनी पदोन्नति या नौकरी से संबंधित लाभ के लिए आंदोलन करते हैं, लेकिन कभी यह नहीं देखा गया कि संस्थान या विभाग का काम क्यों पिछ्ड़ा हुआ है, या घाटा क्यों बढ़ रहा है। कामकाज पूरा न होने की वजह से और दूसरी तरफ घाटा के कारण देश में माहौल है कि सरकारी विभाग बंद कर दिए जाने चाहिए। इससे राष्ट्र की क्षति तो हो ही रही है, आरक्षण भी जा रहा है, इसलिए दलित आदिवासी कर्मचारियों को विशेष सलाह दी जाती है कि वे औरों से बेहतर कार्य करें नहीं तो निजी क्षेत्र में नौकरी भी कम मिलेगी और मिली भी तो भयंकर शोषण होगा जो उपरोक्त रिपोर्ट से आप महसूस कर सकते हैं।

डॉ. उदित राज

उत्तर प्रदेश सरकार ने माना करेंगे पदावनति

उत्तर प्रदेश सरकार ने अंततः सुप्रीम कोर्ट में स्वीकार कर लिया कि जिन लोगों को रद्द हो चुके कानून के तहत आरक्षण का लाभ देकर पदोन्नति दी गई थी, उन्हें पदावनत किया जाएगा। सोमवार को राज्य सरकार ने कोर्ट को बताया कि इस बारे में नीतिगत फैसला ले लिया है।

मालूम हो कि सुप्रीम कोर्ट ने 27 अप्रैल 2012 के फैसले में उत्तर प्रदेश में पदोन्नति में आरक्षण और परिणामी ज्येष्ठता देने के कानून को असंवैधानिक बताते हुए निरस्त कर दिया था। कोर्ट के आदेश के मुताबिक राज्य सरकार को उन लोगों को पदावनत करना था, जिन्हें इस कानून का लाभ देकर पदोन्नति व परिणामी ज्येष्ठता दी गई थी। जब सरकार ने आरक्षण का लाभ पाकर पदोन्नति पाने वाले कर्मचारियों को पदावनत नहीं किया तो सिंचाई विभाग के तीन कर्मचारियों ने सरकार के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अवमानना याचिका दाखिल की। कोर्ट ने जुलाई 2013 में प्रदेश सरकार को अवमानना याचिका पर नोटिस जारी कर जवाब मांगा था। सरकार करीब डेढ़ साल से इस मामले में टाल मटोल कर रही थी। पिछली सुनवाई पर 13 जनवरी को प्रदेश सरकार के वकील रवि प्रकाश मेहरोत्रा ने कोर्ट से कहा था कि सरकार जल्द ही इस बारे में नीतिगत फैसला लेगी।

सोमवार को जब मामला सुनवाई पर आया तो मेहरोत्रा ने पीठ को बताया कि सरकार ने नीतिगत फैसला ले लिया है। उन्होंने नीतिगत फैसला कोर्ट में पेश करने के लिए दो सप्ताह का समय मांगा। जब याचिकार्ताओं के वकील कुमार परिमल ने समय दिए जाने पर आपत्ति नही जताई तो न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा व न्यायमूर्ति पी.सी. पंत की पीठ ने सरकार को दो सप्ताह का समय दे दिया और मामले की सुनवाई चार सप्ताह के लिए टाल दी।

याचिकाकर्त्ता के वकील कुमार परिमल का कहना है कि सरकार ने फिलहाल सिंचाई विभाग के लिए पदावनति आदेश जारी किया है, जबकि सुप्रीम कोर्ट का फैसला तो सभी विभागों के लिए था। सरकार को सभी के लिए आदेश जारी करना चाहिए था।

- दैनिक जागरण से साभार

4 जनवरी 2011 को जब लखनऊ हाई कोर्ट का फैसला पदोन्नति में आरक्षण खत्म करने का आया था तो मैं स्वयं लखनऊ गया, कर्मचारियों से सम्पर्क किया लेकिन कुछेक को छोड़कर साथ न दिए और उल्टा प्रचार करने लगे कि बहन जी को कमजोर करने आए हैं। इससे मैं बहुत आहत हुआ और ऐलान करके आया कि अच्छा होगा कि कोई पदोन्नति में आरक्षण को वापिस करा ले लेकिन लगभग 15 वर्ष के अनुभव के आधार पर यह कहा गया कि परिसंघ के अलावा कोई दूसरा इस कार्य को नहीं करा सकता और अंत में यही हुआ। तमाम बरसाती संगठन और नेता पैदा हो गए। नारा दिए कि वे आरक्षण की लड़ाई लड़े रहे हैं, लेकिन अंदर से जातिवाद करना नहीं भूले। न लड़ और न ही लड़ने दिया और उसी वजह से उ0प्र0 में आज पदावनति हो रही है। अगर अभी भी लोगों ने नहीं चेता तो मुश्किल है कि कोइ से बचा सके।

- डॉ. उदित राज

+++

बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर की 124 वीं जयंती पर परिसंघ द्वारा नए आंदोलन का उद्घोष

राज्य मंत्री, किरन रिजीजू सांसद, मीनाक्षी लेखी एवं प्रदेश अध्यक्ष भाजपा, सतीश उपाध्याय ने भी समारोह को संबोधित किया

राज्य मंत्री, किरन रिजीजू, समारोह को संबोधित करते हुए एवं मंच पर डॉ. उदित राज के साथ डॉ. अंजू काजल, ब्रम्ह प्रकाश सहित परिसंघ के वरिष्ठ पदाधिकारी

नई दिल्ली, 14 अप्रैल, 2015.

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद, डॉ0 उदित राज के नेतृत्व में आज संसद मार्ग, नई दिल्ली पर सैकड़ों संगठनों ने अपने बैनर, पोस्टर के साथ स्टाल लगाए और समारोह में हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए। समारोह को डॉ0 उदित राज जी के अलावा भारत सरकार में गृह राज्य मंत्री, श्री किरन रिजीजू, सांसद, श्रीमती मीनाक्षी लेखी एवं भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष, श्री सतीश उपाध्याय ने भी समारोह को सम्बोधित किया। श्री किरन रिजीजू ने कहा कि मोदी सरकार में वे अकेले बौद्ध मंत्री है और दलितों व गरीबों की पीड़ा को महसूस करते हैं और किसी भी दलित के साथ जातीय भेदभाव व उत्पीड़न कदापि बर्दाश्त नहीं करूंगें, यदि किसी प्रकार का ऐसा मामला मेरे संज्ञान में लाया जाता है तो तुरंत कार्यवाही होगी। उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि यदि सरकार से अपने हितों को सुरक्षित कराने की अपेक्षा करते हैं तो दलितों की आवाज उठाने वाले एकमात्र सांसद, डॉ0 उदित राज को समर्थन देकर मजबूत बनाएं। सांसद एवं दिल्ली नगर पालिका परिषद की चेयरमैन, श्रीमती मीनाक्षी लेखी से आयोजकों ने एन.डी.एम.सी. में कार्यरत् दलित कर्मचारियों की हितों की रक्षा का आवाहन करते हुए जब संबोधन के लिए बुलाया तो श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी ने कहा कि जैसे ही वे एन.डी.एम.सी. की चेयरमैन बनीं तुरंत ही ठेके और दिहाड़ी पर कार्य कर रहे 8500 लोगों को स्थायी कर दिया लेकिन मीडिया ने इसे कोई तवज्जो नहीं दिया, जिससे आप लोगों तक यह संदेश नहीं पहुंच पाया। उन्होंने दलितों व गरीबों की हितों की रक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। श्री सतीश उपाध्याय ने उपस्थित लोगों को बाबा साहेब के जन्मदिवस की शुभकामनांए दीं और कहा कि जरूरी नहीं है कि बाबा साहेब की जयंती सिर्फ अनुसूचित जाति/जन जाति के लोग ही मनाएं, हम सभी को मिलकर मनाना चाहिए, क्योंकि बाबा साहेब का योगदान दूरे देश के लिए है।

डॉ0 उदित राज जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आज डॉ0 अम्बेडकर की 124वीं जयंती के उपलक्ष्य पर संसद मार्ग से घोषणा किया कि उनके विचारों और दर्शन को सही रूप में लागू करने के लिए एक नए आंदोलन की आवश्यकता है। इस अवसर पर परिसंघ की पूरे देश की सभी इकाइयों के द्वारा दस लाख सदस्यता के लक्ष्य की प्राप्ति की शुरुआत की गयी। आज इस समारोह में हजारों लोगों ने सदस्यता ली। दलित व आदिवासी नेताओं ने कहीं ज्यादा डॉ0 अम्बेडकर के सिद्धांतों को अपनी सुविधानुसार व्यक्तिगत् हित में इस्तेमाल किया है। उन्होंने पूरे जीवन जातिविहीन समाज की स्थापना की लड़ाई लड़ी, लेकिन आज हम देखते हैं कि जाति का सहारा लेकर नेता बनना, विधान सभाओं एवं संसद में पहुंचना, तक सीमित रह गया है। इससे न केवल दलित समाज का अहित हो रहा है, बल्कि राष्ट्र की भी क्षति है। हजारों वर्षों तक देश दूसरों के अधीन था, इसलिए कि यहां का समाज हजारों टुकटों में विभाजित था। जब दलित नेता जातिवाद करें तो ठीक है और सवर्ण करें तो बुरा, यह नहीं चलेगा।

डॉ0 उदित राज ने कहा कि समाज को बदलने का कार्य मूलरूप से कर्मचारी-अधिकारी ही कर सकते हैं, न कि सांसद और विधायक। सांसद और विधायकों की संख्या हजार पार नहीं कर सकेगी लेकिन कर्मचारियों व अधिकारियों की संख्या 20 लाख से भी अधिक होगी। चाहे दलित उत्थान हो या राष्ट्र निर्माण हो, अगर सबसे ज्यादा जरूरत है तो सामाजिक शिक्षा की। ये कर्मचारी-अधिकारी ही समाज को बदल सकेंगें। ऐसा परिसंघ का मानना है। परिसंघ की देश की कोने-कोने में शाखाएं हैं, अब इसके कार्यकर्त्ताओं को नकली समतामूलक और मानवतावादी कार्यकर्त्ताओं और नेताओं की असलियत बताने का समय आ गया है। परिसंघ ने कभी सवर्णों की आलोचना करके दलितों को एकजुट करने का कार्य नहीं किया, बल्कि डॉ0 अम्बेडकर के सिद्धांतों पर चलकर संघर्ष किया। परिसंघ वर्तमान में भूमिअधिग्रहण अध्यादेश का समर्थन करता है, क्योंकि जब तक आद्यौगीकरण नहीं होगा तब तक रोजगार सृजित नहीं हो पाएगें। दलितों के पास जमीन भी कम है और इसीलिए बड़े शहरों की ओर पलायन करते हैं। इंडस्ट्रियल कोरीडोर बन जाने से करोड़ों रोजगार पैदा होगें, बड़े शहरों पर आबादी का भार भी कम होगा, कृषि पर आधारित जनसंख्या भी कम होगी।

परिसंघ अपनी पूर्व मांगें, जैसे - पदोन्नति में आरक्षण, आरक्षण कानून बनाना, खाली पदों पर भर्ती, अनुसूचित जाति/जन जाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम को मजबूत करना, शिड्यूल्ड कास्ट सब प्लान एवं ट्राइबल सब प्लान को आबादी के अनुपात में योजनागत् बजट की राशि आबंटित कर दलितों-आदिवासियों के उत्थान, ठेकेदारी प्रथा की समाप्ति, निजी क्षेत्र में भागीदारी, जाति प्रमाण-पत्रों की समस्या आदि के लिए और मजबूती से डॉ0 अम्बेडकर की 124वीं जन्मसदी पर संकल्प दोहराया।

+++

विभिन्न प्रदेशों के प्रभारी

संसदीय कार्य में व्यस्तता के कारण परिसंघ के लोगों को सम्पर्क करने में कुछ मुश्किलें हो रही हैं, इसलिए निम्नलिखित साथी जो राष्ट्रीय कार्यालय के सम्पर्क में बने रहते हैं, उनके नाम और नम्बर दिए जा रहे हैं, ताकि जब जरूरत पड़े तो मुझ तक उनके माध्यम से बात को पहुंचा सकें। इसके अलावा परिसंघ का काम पूरे देश में बढ़ा है और उसकी देखरेख और आगे बढ़ाने के लिए प्रदेश प्रभारी नियुक्त करना जरूरी हो गया है। संसदीय कार्य न भी होता तो भी परिसंघ के द्वारा लिए गए लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रभारियों की जरूरत है। 10 लाख की सदस्यता का लक्ष्य अपने आप में बहुत बड़ा है। हर प्रदेश में मेरा पहुंचना या वहां के संगठन की गतिविधियों को जानना संभव नहीं है, इसलिए प्रभारी का होना जरूरी है।

नाम व मोबाइन नंम्बर		प्रदेश
डॉ.नाहर सिंह	-09312255381	आन्ध्रा प्रदेश,कर्नाटक,केरल
परमेश्वरा राव घंटा	-09985518001	आन्ध्रा प्रदेश,कर्नाटक,केरल
रविन्द्र सिंह	-07503051128	उत्तर प्रदेश और दिल्ली
डॉ.गीता कनोजिया	-09268385820	उत्तर प्रदेश
डॉ.अंजू काजल	-09891307796	दिल्ली और चंदीगढ़
डॉ.धनंजय सिंह	-08010720771	बिहार और उड़ीसा
योगेश आनंद	-09654144068	छत्तीसगढ़
आर.एस.हंस	-09811800137	मध्य प्रदेश
बलबीर सिंह	-09999051041	गुजरात
भानू पुनिया	-09013332151	हरियाणा,हिमांचल प्रदेश,चंदीगढ़
ब्रम्ह प्रकाश	-09871170028	पंजाब
डॉ.सत्येन्द्र प्रियाशी	-09810235825	उत्तराखण्ड
सत्यनारायण	-09873988894	वेस्ट बंगाल
हरिश मीना	-09212439214	राज्यस्थान
यु.सी.मीना	-09990725308	सभी बैंको को संगठीत करना
मोहनलाल	-09868161938	सभी बैंको को संगठीत करना
खूबराम	-09953591635	सभी बैंको को संगठीत करना
श्रीमती मल्लिका	- 09582562090	तमिलनाडु

5 अप्रैल को कोटा में परिसंघ का एकदिवसीय प्रदेश सम्मेलन सम्पन्न

अनुसूचित जाति- जन जन जाति संगठ्नों का अखिल भारतीय परिसंघ, राजस्थान, की ओर से 5 अप्रैल को रावतभाटा (कोटा) में एक दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद, डॉ. उदित राज कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

कोटा आगमन पर विभिन्न अनुसूचित जाति/जनजाति संगठ्नों के सदस्यों और पदाधिकारियों ने कोटा रेलवे स्टेशन पर परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद डॉ. उदित राज का भव्य स्वागत किया। स्वागत हेतु आए सभी सदस्यों और पदाधिकारियों का डॉ. उदित राज ने धन्यवाद दिया और दलित और आदिवासी समाज को मजबूत और विकसित बनाने के लिए एकजुट होकर कार्य करने का आहवान किया।

रावतभाटा में परिसंघ के प्रदेश सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए डॉ0 उदित राज, मंचासीन, पंचम राम, राम किशन के साथ परिसंघ के अन्य पदाधिकारीगण

कोटा में संक्षिप्त कार्यक्रम के बाद डॉ. उदित राज रावतभाटा के लिए रवाना हो गए रावतभाटा में परिसंघ की रावतभाटा ईकाई के पदाधिकारियों, अध्यक्ष रामकिशन जी, वी. बी. नाइक, रामहेत बागड़ी, चतुर्भुल खींची और अन्य गणमान्य लोगों ने उनका हार्दिक स्वागत किया रावतभाटा में सबसे पहले डॉ. उदित राज ने बाबा साहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर पुस्तकाय में बाबा साहेब को पुष्पांजलि और अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए उन्होंने डॉ. बी.आर. अम्बेडकर पुस्तकालय का निरीक्षण किया और पुस्तकालय की सदस्यता और अधिक बढ़ाने के लिए निरंतर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम करने के सुझाव दिये।

रावतभाटा परमाणु संयंत्र अतिथि गृह पहुंच कर उन्होंने परमाणु संयंत्र के वरिष्ठ अधिकारियों से बात की ओर विभिन्न गतिविधियों का जायजा लिया उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों से परमाणु संयंत्र में कार्य कर रहे अनुसूचित जाति/जनजाति के कर्मचारियों के हितों का विशेष ध्यान रखने के भी निर्देश दिए।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए अनुसूचित जाति/जनजाति संगठ्नों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद डॉ. उदित राज ने कहा कि वह सांसद की हैसियत से यहां नहीं आए हैं, बल्कि परिसंघ के अध्यक्ष की हैसियत से आएं हैं। वे लोगों को उनके हक और अधिकार बताने आए हैं। आज आरक्षण को समाप्त करने की बात कही जाती है, अगर आरक्षण समाप्त करना है तो सभी जगह से समाप्त किया जाए या फिर चलने दिया जाए। डॉ. उदित राज ने कहा कि मंदिरों में ब्राह्मणों को आरक्षण, जमीनों में क्षत्रियों और अलग-अलग जगहों पर देश की सामाजिक व्यवस्थाओं में आरक्षण है। फिर ऐसे में जब यह आरक्षण है तो, संविधान के अनुसार, शोषित समाज को भी आरक्षण मिलना ही चाहिए। आरक्षण देश में इसलिए लागू किया गया था ताकि उपेक्षित वर्ग की भी भागीदारी हो। परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि देश की एकता में शोषित वर्ग की भागीदारी संविधान में सुनिश्चित की गई थी। उन्होंने कहा कि आरक्षण में कटौती हो रही है। ऐसे में सरकार को निजी क्षेत्र में भी आरक्षण देना चाहिए। साथ ही उन्होंने कहा कि ठेकेदारी प्रथा समाप्त हो। ठेकेदारी प्रथा से आरक्षण और शोषित समाज की भागीदारी कम हो गई है।

परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज ने कहा कि दलित समाज का आरक्षण नहीं होता तो, मैं आज मंच पर नहीं होता। आज देश में आरक्षण के कारण ही शोषित वर्ग की भागीदारी दिखती है।

अनुसूचित जाति/जनजाति संगठ्नों का अखिल भारतीय परिसंघ के अध्यक्ष, डॉ. उदित राज ने रावतभाटा में परिसंघ के सम्मेलन में कहा कि देश में 101 सांसद और 870 विधायकों के आरक्षण से दलित समाज का भला नहीं हो सकता। एम. एल.ए., एम.पी. से नहीं, बल्कि निजी क्षेत्र में भागीदारी से होगा दलित समाज का भला। हमें सरकारी और निजी क्षेत्र में आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए। देश में एस. सी. एस.टी के नौकरीपेशा लोग 40 लाख थे, लेकिन आज 20 लाख भी नहीं रह गए हैं। हमें यह व्यवस्था बदलनी होगी। डॉ. उदित राज ने एस.सी./एस.टी के लोगों को कहा कि सिर्फ बच्चों को शिक्षित करने से हक नहीं मिलेगा। हक तो संगठित होने से ही मिलेगा। उन्होंने कहा कि सरकारी आरक्षण खत्म करने की साजिश रची जा रही है। सरकारी नौकरियां कम हो रही हैं। ठेकेदारी प्रथा बढ़ रही है। आउटसोर्सिंग हो रही है। ऐसे में दलित समाज का हक कम हो रहा है। सभी एकत्रित होंगे, तभी देश पर अपना राज होगा। समाज को आगे लाने की निरंतर सोच होनी चाहिए। ताक़त दिखाओ सरकार झुकेगी। उन्होंने मांग की कि ठेकेदारी प्रथा समाप्त होनी चाहिए। खासकर सफाई जैसे क्षेत्र में सह व्यवस्था बंद होनी चाहिए। भूमिहीनों को भूमि मिले। निजी क्षेत्र में कांग्रेस राज में आरक्षण देने की बात हुई थी, लेकिन ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। उन्होंने कहा कि आज संविधान में जो अधिकार मिले हैं, वह डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की वजह से मिले हैं। हमें उस हक और अधिकार को आगे और बढ़ाना है। इस मौके पर अनुसूचित जाति/ जन जाति संगठ्नों का अखिल भारतीय परिसंघ की रावतभाटा इकाई के अध्यक्ष, रामकिशन ने कहा कि एस.सी./एस.टी के लिए बजट खर्च किया जाए। इसकी जानकारी भी मिले, जांच भी होनी चाहिए। विकास में पैसा लगे, खर्च नहीं करने पर अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई हो। रिजर्वेशन का लाभ मिले। वी.बी. नाइक ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। परिसंघ प्रदेश प्रभारी हरीश मीना ने कहा कि सी और डी ग्रेड में ठेकेदारी प्रथा को समाप्त किया जाए। परिसंघ के सदस्यों और पदाधिकारियों से आपस में संपर्क में रहकर संगठित रूप से कार्य करने को कहा। रामहेत बागड़ी ने कहा कि दलितों की समस्याओं का निदान हो, सम्मान मिले। सभी मिलकर परिसंघ के लिए कार्य करें। चतुर्भुज खींची ने कहा कि शोषितों पर अत्याचारों पर रोक लगे, दलित समाज शिक्षित बने और संगठित होकर संघर्ष करे। गांव-गांव तक अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता और परिसंघ का संदेश पहुंचाने की आवश्कता है।

+++

भव्य रूप से मनाया गया 'जौंती उत्सव'

जौंती उत्सव के समय मंच पर डॉ. उदित राज और अन्य साथी

नई दिल्ली, 11 अप्रैल, 2015 डॉ. उदित राज, सांसद, उत्तर पश्चिम दिल्ली लोक सभा क्षेत्र ने 'सांसद आदर्श ग्राम योजना' के अंतर्गत जौंती गांव को गोद लेकर उसे आदर्श गांव के रूप में विकसित करने का फैसला किया है।

डॉ. उदित राज और उनकी टीम ने गांव वालों के साथ पिछले कुछ सप्ताहों से कई सभाएं की ताकि इस गांव के सर्वांगीण विकास के लिए रूपरेखा तैयार की जा सके। अपनी तरह के एक अनूठे प्रयोग द्वारा डॉ. उदित राज ने स्मार्ट विलेज से संबंधित कई राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय विशेषज्ञों से बातचीत की ताकि एक चिरस्थाई, प्रदूषण रहित, प्रगति की योजना बनायी जा सके। डॉ. उदित राज और उनकी टीम ने जौंती गांव की चरणबद्ध प्रगति की रूपरेखा तैयार की है।

इस अद्भुत रूपरेखा के उद्घाटन के अवसर पर गांव में एकदिवसीय 'जौंती उत्सव' आज दिनांक 11 अप्रैल, 2015 को मनाया गया, जिसमें अगल-बगल के गांवों के लोगों को भी आमंत्रित किया गया। इस उत्सव में कई गैर सरकारी संस्थाओं जैसे - गुड शेफर्ड एवं एराइज इंडिया आदि ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और इस मुद्दे पर अपना पूरा समर्थन देने का आश्वासन दिया।

जौंती गांव को आदर्श गांव चुने जाने पर लोगों में अत्यधिक उत्साह देखने को मिला और यह आशा व्यक्त की गयी कि 'जौंती उत्सव' लोगों को इकट्ठा करने में सहायक होगा और संचालन समिति के प्रयास सफल होगें।

जौंती गांव में यह योजना अपने आप में अनूठी है, जिसमें सारे गांव के लिए एक मास्टर प्लान बनाया गया है। जौंती गांव अपने आप में पहला ऐसा गांव होगा, जहां शत् प्रतिशत इलेक्ट्रानिक हेल्थ रिकॉर्ड बनाए जाएंगें। अप्रैल के महीने में ही 4-5 गांव के लोगों को विशेषज्ञों की निगरानी में प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि वे बाद में घर-घर जाकर संबंधित आकड़े (डाटा) एकत्रित कर सकें। इसी अभियान के दौरान उन लोगों की भी पहचान की जाएगी जिन्हें बैंक खाते खोलने हैं, आधार कार्ड बनवाने हैं या वोटर आई.डी. कार्ड इत्यादि ताकि भविष्य में जो भी योजनाएं बनायीं जाएं उनके अच्छे परिणाम निकलें। इस आधार तैयार डाटा बैंक को एस.एम.एस. सरवर के साथ जोड़ दिया जाएगा ताकि गांव के प्रत्येक व्यक्ति को सही समय पर सूचना मिलती रहे। इन सुविधाओं से गांव वाले न केवल अपने आप में सक्षम हो सकेगें, बल्कि उनको इनसे आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिलेगी। डॉ. उदित राज ने इस अवसर पर उपस्थित निजी क्षेत्र की कंपनियों के अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे अपना समय और प्रयास का बढ़चढ़कर योगदान करें। दक्षता प्रशिक्षण (स्किल ट्रेनिंग) का शुभारंभ भी इसी महीने में कर दिया जाएगा।

एक और पहल में, जौंती गांव सबसे पहला गांव होगा जिसकी अपनी वेब पोर्टल होगी। वेबसाइट www.merajaunti.com का भी विधिवत् उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर बोलते हुए हुए डॉ. उदित राज जी ने कहा कि मेरा प्रयास रहेगा कि इस गांव का विकास इस तरह से किया जाए, जिससे एक चिरस्थाई मॉडल तैयार हो जिसको आगे चलकर दूसरे गांव में भी अपनाया जा सके। यह प्रगति केवल सड़कों और दूसरी आवश्यक सुविधाओं तक ही सीमित नहीं होगी बल्कि एक ऐसा चिरस्थाई वातावरण बनाया जाएगा जिससे गांव वालों को स्वास्थ्य, शिक्षा एवं प्रशिक्षण की सुविधाएं दी जा सकें ताकि उनको अच्छी नौकरियां मिल सकें, जिससे प्रगति के साथ-साथ लोगों की खुशहाली भी सुनिश्चित की जा सके। हमारा प्रयास होगा कि लोगों में जौंती गांव और अपनी उपलब्धियों के प्रति स्वाभिमान की भावना पैदा की जा सके। डॉ उदित राज की टीम ने कहा कि हमें स्थानीय लोगों की भाषा में सोचना चाहिए और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काम करना चाहिए। हम एक ऐसी योजना तैयार कर रहे हैं, जिससे इस क्षेत्र की सांस्कृतिक उपलब्धियों को उभारा जा सके और साथ ही इस गांव का सर्वांगीण विकास किया जा सके, जो कि आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकताओं को भी ध्यान रखें।

संजय गोयल, उपायुक्त, नॉर्थ वेस्ट एवं श्री अनूप ठाकुर - एसडीएम ने भी इस गांव का पिछले कुछ अवसरों पर यहां की आवश्यकताओं का जायजा लेने के लिए दौरा कर चुके हैं। उन्होंने गांव वालों को आश्वासन दिया है कि मौजूदा सरकारी परियाजनाओं को यहां की आवश्यकताओं के हिसाब से परिवर्तित कराकर पूरा लाभ पहुंचाने का कार्य किया जाएगा।

वास्तविक हल इस बात में है कि स्थानीय लोगों को ऐसी कुशलताओं का प्रशिक्षण दिया जाए, जिससे वे लोग आज की अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था में प्रभावी ढंग से भाग ले सकें। इसमें छोटे-छोटे उद्योग स्थापित किये जाएगें, जहां पर प्रमाणित तकनीक का प्रयोग किया जाएगा ताकि गांव और छोटे शहरों के लोग अपनी व्यावसायिक समस्याओं का हल ढूढ़ सकें। इस कार्यप्रणाली से कई हजार हल बहुत ही कम व्यय पर निकल सकेगें और लोगों को बड़ी अच्छी नौकरियां मिल पाएंगीं, जिनका भविष्य में भी बड़े कारगर ढंग से उपयोग हो सकेगा।

+++

बुनियादी क्रांति के पहले पुरुष : महात्मा ज्योतिराव फुले

'जिन्होंने हिन्दू समाज की छोटी जातियों को उच्च वर्णों के प्रति उनकी गुलामी के सम्बन्ध में जागृत किया और जिन्होंने विदेशी शासन से मुक्ति पाने से सामाजिक लोकतंत्र (की स्थापना) अधिक महत्वपूर्ण है, इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया, उस आधुनिक भारत के महानतम शूद्र महात्मा फुले को सादर समर्पित'.यह पंक्तियां उन डॉ. अम्बेडकर की है जिनका मानना था-'अगर इस धरती पर महात्मा फुले जन्म नहीं लेते तो डॉ. अम्बेडकर का भी निर्माण नहीं होता.' उसी डॉ. अम्बेडकर ने 10 अक्तूबर, 1946 को अपनी चर्चित रचना- 'शूद्र कौन थे?' को महात्मा फुले के नाम समर्पित करते हुए उपरोक्त पंक्तियां लिखी थीं। बहरहाल जिस महामानव के बिना भारत के सर्वकाल के सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी का निर्माण नहीं होता, उस जोतीराव फुले का जन्म 11 अप्रैल, 1827 को महाराष्ट्र के सातारा में एक ऐसे माली परिवार में हुआ था जिसे पेशवा ने प्रसन्न होकर 36 एकड़ जमीन दान दी थी। अतः अपेक्षाकृत संपन्न पिता की संतान होने के कारण उन्हें बेहतर शिक्षा मिली। लेकिन एक घटना ने उनके जीवन की धारा ही बदल दी। युवक जोती एक ब्राह्मण की बारात में गए थे, जहां उन्हें किसी ने पहचान लिया। एक शूद्र होते हुए भी तुमने हम लोगों के साथ चलने की कैसे हिमाकत की? कहकर ब्राह्मणों ने न सिर्फ जमकर उनकी पिटाई कर दी बल्कि बुरी तरह अपमानित कर बारात से भगा दिया। अपमान से जर्जरित युवक जोती ने उसी क्षण ब्राह्मणशाही से टकराने का संकल्प ले लिया जिसके लिए उसने शिक्षा को ही हथियार बनाने की परिकल्पना की।

ब्राह्मणशाही से टकराने का मतलब ब्राह्मणों द्वारा फैलाये गए आडम्बर, अन्धविश्वास, अशिक्षा, अस्पृश्यता इत्यादि से लड़ना। इसके लिए ज्ञानपिपासु जोती ने तमाम उपलब्ध ग्रंथों का अध्ययन किया। किन्तु टॉमस पेन की 'मनुष्य के अधिकार' नामक ग्रन्थ ने उन्हें नई प्रेरणा दी। ब्राह्मणों एवं ब्राह्मणवाद से टकराने के लिए उन्होंने शिक्षा के महत्व का नए सिरे से उपलब्धि किया। शिक्षा प्रसार से ब्राह्मणों द्वारा फैलाये गए अन्धविश्वास, अज्ञानता से शुद्रातिशुद्रों तथा नारी जाति को मुक्ति दिलायी जा सकती है, यह उपलब्धि कर उन्होंने अपने घर से ही इसका अभियान शुरू किया। 13 वर्ष की उम्र में जोतीराव का विवाह 3 जनवरी, 1831 को जन्मीं नौ वर्षीय सावित्रीबाई से हुआ था। उन्होंने अपनी पत्नी और दूर के रिश्ते की बुआ सगुणाबाई क्षीरसागर, जिन्होंने उनकी मां के मरने के बाद उनकी देखभाल की थी, को खुद पढ़ाना शुरू किया। दोनों ने मराठी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। उन दिनों पुणे में मिशेल नामक एक ब्रिटिश मिशनरी महिला नॉर्मल स्कूल चलाती थी। जोतीराव ने वही दोनों का तीसरी कक्षा में दाखिला करवा दिया। जहां से उन्होंने अध्यापन कार्य का प्रशिक्षण भी लिया। फिर तो शुरू हुआ ब्राह्मणवाद के खिलाफ अभूतपूर्व विद्रोह।

ब्राह्मणवाद का अन्यतम वैशिष्ट्य ज्ञान संकोचन रहा है जिसका सदियों से शिकार भारतीय नारी और शुद्रातिशुद्र बने। इन्हें ज्ञान क्षेत्र से इसलिए दूर रखा गया ताकि वे दैविक गुलामी (डिवाइन-स्लेवरी) से मुक्त न हो सकें। क्योंकि डिवाइन-स्लेवरी से मुक्त होने का मतलब शोषक समाज के चंगुल से मुक्ति, किन्तु जोतीराव तो यही चाहते थे। लिहाजा उन्होंने 1 जनवरी, 1848 को पुणे में एक बालिका विद्यालय की स्थापना कर दी, जो किसी भी भारतीय द्वारा स्थापित बौद्धोत्तर भारत में पहला विद्यालय था। सावित्रीबाई फुले ने इस विद्यालय में शिक्षिका बनकर आधुनिक भारत में पहली अध्यापिका बनने का कीर्तिमान स्थापित किया। इस सफलता से उत्साहित होकर फुले दंपति ने 15 मई, 1848 को पुणे की अछूत बस्ती में अस्पृश्य लड़के-लड़कियों के लिए भारत के इतिहास में पहली बार विद्यालय स्थापना की। थोड़े ही अन्तराल में उन्होंने पुणे और उसके पार्श्ववर्ती इलाकों में 18 स्कूल स्थापित कर दिए। हिन्दू धर्मशास्त्रों में शुद्रातिशुद्रों और नारियों का शिक्षा-ग्रहण व शिक्षा-दान धर्मविरोधी आचरण के रूप में चिन्हित रहा है इसलिए फुले दंपति को शैक्षणिक गतिविधियों से दूर करने के लिए धर्म के ठेकेदारों ने जोरदार अभियान चलाया। जब सावित्रीबाई स्कूल जाने के लिए निकलतीं, वे लोग उनपर गोबर-पत्थर फेंकते और गालियां देते थे। लेकिन लम्बे समय तक उन्हें उत्पीड़ित करके भी जब वे अपने इरादे में कामयाब नहीं हुए, तब उन्होंने शिकायत फुले के पिता तक पहुंचाई पुणे के धर्माधिकारियों का विरोध इतना प्रबल था। कि उनके पिता को स्पष्ट शब्दों में कहना पड़ा, 'या तो अपना स्कूल चलाओ या मेरा घर छोड़ो।' फुले ने गृह निष्कासन का विकल्प चुना निराश्रित फुले दंपति को पनाह दिया उस्मान शेख ने। फुले ने अपने कारवां में शेख साहब की बीवी फातिमा को भी शामिल कर, अध्यापन का प्रशिक्षण दिलाया। फिर अस्पृश्यों के एक स्कूल में अध्यापन का दायित्व सौंपकर फातिमा शेख को उन्नीसवीं सदी की पहली मुस्लिम शिक्षिका बनने का अवसर मुहैया कराया।

नारी शिक्षा, अतिशूद्रों की शिक्षा के अतिरिक्त समाज में और कई वीभत्स समस्याएं थीं जिनके खिलाफ पुणे के हिन्दू कट्टरपंथियों के डर से किसी ने अभियान चलाने का पहला कदम नहीं रखा। लेकिन फुले थे सिंह पुरुष और उनका संकल्प था समाज को कुसंस्कार व शोषणमुक्त करना। लिहाजा ब्राह्मण विधवाओं के मुंडन को रोकने के लिए नाइयों को संगठित करना, विश्वासघात की शिकार विधवाओं (जो ज्यादातर ब्राह्मणी होती थीं) की गुप्त व सुरक्षित प्रसूति, उनके अवैध माने जाने वाले बच्चों के लालन पालन की व्यवस्था, विधवाओं के पुनर्विवाह की वकालत, सती तथा देवदासी प्रथा का विरोध भी फुले दंपति ने बढ़-चढ़कर किया। इस प्रक्रिया में सावित्रीबाई फुले बनीं आधुनिक भारत की पहली समाजसेविका।

फुले ने अपनी गतिविधियों को यहीं तक सीमित न कर किसानों, मिल-मजदूरों, कृषि-मजदूरों के कल्याण तक भी प्रसारित किया। इन कार्यों के मध्य उन्होंने अस्पृश्यों की शिक्षा के प्रति उदासीनता बरतने पर 19 अक्तूबर,1882 को हंटर आयोग के समक्ष जो प्रतिवेदन रखा, उसे भी नहीं भुलाया जा सकता। वैसे तो फुले ने शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य करते हुए सर्वजन का ही भला किया किन्तु बहुजन समाज सर्वाधिक उपकृत हुआ उनके चिंतन व लेखन से। उनकी छोटी-बड़ी कई रचनाओं के मध्य जो सर्वाधिक चर्चित हुईं वे थी। 'ब्राह्मणों की चालाकी,'' किसान का कोड़ा' और 'गुलामगिरी' । इनमें 1 जून,1873 को प्रकाशित गुलामगिरी का प्रभाव तो युगांतरकारी रहा। गुलामगिरी की प्रशंसा करते हुए विद्वान सांसद शरद यादव ने 'गुलामगिरी हमारा घोषणापत्र' नामक लेख में लिखा है। 'मूलतः 1873 में प्रकाशित जोतीराव की पुस्तक गुलामगिरी तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ शूद्रों और अछूतों का घोषणापत्र था। जिस तरह कार्ल मार्क्स ने 1848 में पश्चिम यूरोप के औद्योगिक समाज के सबसे ज्यादा शोषित और उत्पीड़ित समाज के अधिकारों को रेखांकित करते हुए कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र निकाला था। उसी तरह जोतीराव ने गुलामगिरी प्रकाशित कर भारत के सबसे अधिक शोषित एवं उत्पीड़ित तबके के अछूतों एवं शूद्रों के अधिकारों की घोषणा की थी।

फुले भारतीय समाज की ब्याधि को जानते थे। इसलिए उन्होंने अपने ऐतिहासिक ग्रन्थ गुलामगिरी द्वारा पहला, दैविक - गुलामी दूर करने; दूसरा, शोषितों में भ्रातृत्वभाव पैदा करने और तीसरे प्राचीन आरक्षण-व्यवस्था (वर्ण-व्यवस्था) की खामियों को दूर करने पर बल दिया। दैविक-दासत्व के दूरीकरण और भ्रातृत्व की स्थापना के लिए उन्होंने प्रधानतः पुनर्जन्म के विरुद्ध घोर संग्राम चलाया तो वेद,ब्राह्मण-ग्रन्थ, वेदान्त और सभी धर्म-ग्रंथों, ईश्वर को शोषक करार देकर इनकी धार्मिक पवित्रता की धज्जियाँ उड़ा दीं। संवाद शैली में रचित गुलामगिरी उन्होंने धोंडीराव से जो संवाद किये हैं, वह लोगों में ईश्वर-भय दूर करता है एवं शोषणकारी वर्ण-व्यवस्था को ईश्वरकृत न मानने का स्पष्ट रास्ता सूझाता है। इस तरह यह ग्रन्थ शोषितों को दैविक दासत्व से मुक्त करने का आधारभूत काम किया।

शोषितों में दैविक-गुलामी से मुक्ति और मातृत्व की भावना पैदा करने के साथ हिन्दू-आरक्षण (वर्ण-व्यवस्था) में शक्ति के स्रोतों के बंटवारे में गड़बड़ियां दुरुस्त करना फुले का प्रमुख लक्ष्य रहा। इसके लिए उन्होंने गुलामगिरी में लिखा-'हमारी दयालु सरकार (अंग्रेज सरकार) ने भट्ट ब्राह्मणों को उनके संख्यानुसार सरकारी कार्यालयों में नियुक्ति नहीं करना चाहिए। ऐसा मेरा कहना नहीं है। किन्तु उसके साथ ही अन्य छोटी जातियों के लोगों की उनकी संख्यानुसार नियुक्ति होनी चाहिए। इससे सभी भट्ट ब्राह्मण सरकारी नौकरों के लिए एक साथ मिलकर हमारे अज्ञानी शूद्रों को नुकसान पहुंचाना संभव नहीं होगा। 'गुलामगिरी की यह पंक्तियां ही परवर्तीकाल में सामाजिक न्याय का मूलमंत्र बनीं। आज दलित-पिछड़ों को शासन-प्रशासन, डाक्टरी, इंजीनियरिंग, अध्यापन इत्यादि में जो भागीदारी मिली है उसमे उपरोक्त पंक्तियों की ही महती भूमिका है। इन्हीं पंक्तियों को पकड़कर शाहूजी महाराज ने अपनी रियासत में 26 जुलाई,1902 को आरक्षण लागू कर सामाजिक न्याय की शुरुआत की तो पेरियार ने 27 दिसंबर,1929 को मद्रास प्रान्त में बड़े पैमाने पर दलित पिछड़ों को नौकरियों में प्रतिनिधित्व दिलाया। संविधान में डॉ. अम्बेडकर ने दलितों को आरक्षण सुलभ कराने के साथ धारा 340 का जो प्रावधान रखा, उसके पीछे इन पंक्तियों की ही प्रेरणा रही। मंडलवादी आरक्षण के पीछे गुलामगिरी की भूमिका को शायद पहचान कर ही वी.पी.सिंह ने फुले के प्रति श्रद्धा इन शब्दों में व्यक्त की थी-'महात्मा फुले भारत की बुनियादी क्रांति के पहले महापुरुष थे। इसलिए वे आद्य महात्मा बुद्ध-महावीर, मार्टिन लूथर, नानक आदि के उत्तराधिकारी थे। उनका यह समर्पित जीवन आज के युग का प्रेरणा स्रोत बना है ।

एच.एल.दुसाध
राष्ट्रीय अध्यक्ष
बहुजन डाइवर्सिटी

+++

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का
अखिल भारतीय परिसंघ
की ओर से
महात्मा ज्योतिराव फुले
की 11 अप्रैल 2015 को 188वीं जयंती के
शुभअवसर पर सभी देशवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. उदित राज राष्ट्रीय अध्यक्ष
टी-22 अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस,नई दिल्ली-110001
Tel : - 011-23354841-42, Mob. : 9013869539, Whatsapp No. 09999504477
Miss Cell 09015552266, www.uditraj.com, Emial dr.uditraj@gmail.com

Dr. Udit Raj raised this issue in Lok Sabha during zero hours on 20 April, 2015 but was vehemently opposed by AIDMK's MPs

Dalit forced to attend peace meet with attackers

Almost two weeks after upper caste Hindus allegedly beat up a Dalit youth and urinated in his mouth in Tamil Nadu's Kerinshangari district, police on Thursday called for a peace meeting between the victim and the accused to settle the issue.

The meeting was called by Uthangarai Deputy Superintendent of Police Baskaran. But some in the village said it was meant to force Aravindhan (18), who was attacked during a temple festival in his village on March 2, to (with draw) his complaint, Aravindhan, too, said he was forced to attend the meeting at the DSP's office.

Aravindhan, who belongs to the Kuravar community, had been working in Bangalore till last month, "He left his job and returned home since we were trying to get him a jon in Sinapore. It was almost confirmed and his passport verification process was on when the attack took place," said Saritha ,Aravind hans's sister, adding the they have faced more threats since the incident.

"The police are refusing to take action and no arrests have been made. Pressure is building on us to withdraw the complaint," Saritha said.

Meanwhile, one officer said that besides Aravindan and his friend Dinesh, who was also attacked, four of the seven accused attended the peace meeting.

" My frined Dinens was with me when a local gang surrounded us and started attacking him. I tried to stop them;' but they dragged us to a urine shed and beat us with belt and sticks. They abused us on the basis of our cast and tied up my hands with a belt. When I asked for water, one of them urinated in my mouth' Sid Aravindhan.

" Police did not ask me to withdraw the complaint, but I was threatened that I will be imprisoned if don't reveal the truth", Aravindhan added. He said the police initially refused to register a case, Now they are alleging we attempted to to (misbe have) with women and that led to the attack. Today I was told about this case against me after I was forced to sit before foud accued who attacked me" he said. It was a similar peace committee called by Namakkal district administration that had forced author Perumal Murugan to sign an affidavit agreeing to withdraw a controversial book in January.

The FIR initially omitted details of how Arvindhan was humiliated. Later it was revised to include the SC/ST Prevention of Atrocitis Act. But Bakaran denied reports that he tried to settle the case The case itself is false. It is ture he was severely beaten up. But I don't believe they urinated in his mouth. That's a false complaint. Anyway we are probing the issue. We have not registred a case againt Aravidhan. The accused will surrender. before the court he said.

+++

BJP MP Udit Raj raised ghar wapsi at party meet, said it hurt govt.

The Indian Express 11 april 2015: QUESTIONING his party's stand on the ghar wapsi reconvrsion compaing of hindutva organisation first time BJP MP and Dalit leader Udit Raj told that the campaign has sullied India's image on the world stage.

BJP leaders present at the Bangalor meeting last week told The Indian Express tha Uidt Raj raised the issue in the presence of Prime Minister Narendra Modi, Party chief Amit Shah and other senior leadres.

" He spoke passinonately that the Christian community in the country is feeling insecure and the international community is concerned about the toxic atmosphere created by the "ghar wapsi" campaing. He said the BJP, in its political resolution, should send a strong message against it one of the leaders said.

Asked about, Udit Raj,MP from North-West Delhi, confirmed he had raised the matter, and tht his speech had initiated a "debate" on the issue at the party meet.

I rased the issue be cause the opposition is spreading the word that minorities are unsafe under the BJP goverment and that we are against minoritie. Time and again, they have raised it and the inage of the country and the goverment has been hit by the campaign he said.

"Both the Prime Minister and (Union Minister) M Venkaia Naidu have already rejected this. I said as responsible party, the BJP should send this message that we are detached from this"

Sources, however, said Udit Raj asked Prime Minister Modi how will he face global leadres when he meets them on his tours abroad.

Mentioning that he was in touch with Christian leaders, he told the meeting that community leaders abroad, especially in the US and Europe, keep close track of developments in India and will pressure their leadreship which in turn, could affect ties.

Following his intervention a few others also spoke on the matter and Naidu replied to the debate. The minister explained that many of the incident, alleged as attacks on minotities were "simple criminal acts" and it was the opposition partiession that these were communal attacks.

Referring to the gangrape of a nunu in West Bengal and attacks on churches in Delhi, Naidu said al such incidents were committed by anti-so-cial elements and there was no communal angle to them.

"He urged the party to counter the campaing and protect the image of the government. Naidu also warned party leaders against making controversial statemnts," said wish to be named.

Dr. Udit raj's intervention comes at a time when the RSS is trying to bring when out unknown angles of the personality of BR Ambedkar.

Sangh mouthpieces Organiser and Panchjanya will be bringing out a 200 page special supplement on Ambedkar on April 14, His 124 th birth annviersary which is being celebrated by the BJP with fanfare across the country.

Some of the aricles explain hodw the Dalit leader had vehemently opposed Islamic aggression and conversion ton Islam which the RSS leaders view as his support to ghar wapsi. Sources said around 5,00,000 copies will be distributed in the states.

+++

Jaunti village in NW Delhi to be developed as the model village

11th April, 2015. New Delhi: Under the leadership of Dr. Udit Raj, Member of Parliament, North West Delhi, village Jaunti in North West Delhi, has been adopted for development as a model village, under the "SaansadAdarsh gram Yojana".

The villagers, along with the members of Dr. UditRaj's team have met multiple times over the past few weeks, to chalk out the strategy roadmap for the holistic development of the village. In a first of it's kind experiment, Dr. Udit Raj has successfully got together domain experts on the subject of 'development of smart village and a sustainable eco-systemfrom India &overseas', to sit with the village dwellers, and jointly develop the roadmap.DrRaj's core team have come up with a phase-wise strategy for the development of village Jaunti.

In an unique affair, to unveil the entire roadmap for the future, the villagers held a one day 'JauntiUtsav' in the village, on the 11th of April, 2015 (Saturday), where invites were sent to friends & relatives from the surrounding villages. Various NGO's like Good Shepherd and Arise India came for the event and expressed desire to support the noble cause.

There is visible palpable excitement in the village about being chosen as the first 'Adarsh Gram' of the area, and the JauntiUtsav should bring everyone together, so that the unique efforts of the steering team bears fruits."

As a unique innovation, Jaunti is the first village, which is coming up with a master plan for the entire village. Jaunti also intends to be the first village with 100% electronic health records mapped. During the month of April, 4-5 volunteer from the village would undergo training under the guidance of specialists, and then accomplish a door-to-door campaign to capture the data. During the same exercise, they would also identify people who seek Bank accounts, Aadhar cards, Voter ID etc. so that all future projects achieve the desired 'Inclusive' results. Once the data bank is ready, we can integrate it with an SMS server so that every member of the village is included real time, on all communications. These tools not only are an enabler, but a motivator too. Thirdly, Dr. Udit Raj, who requested executives from the private sector to volunteer their contribution of time & effort. The skill training exercise too shall formally begin this month.

In another first, Jaunti aims to be the first village with a web portal of it's own. www.merajaunti.co mwas also formally launched during the Utsav on the 11th of April.

The Jaunti team has also evolved a mascot and aptly named him 'Jonti, from Jaunti' to bind the entire village into the mission. The mascot is youthful & contemporary, to appeal to the young demography of the village. PreetiChhikara, a 15 year old from the village finds Jonti to be a 'cute companion'.

Dr. Udit Raj stated, "My endeavor is not to just develop the physical properties of the village, but to evolve a sustainable model which I intend to replicate in other villages too. The development will not only be limited to building roads and other high-end infrastructure, but also creating a sustainable environment, which ensures good access to heath care, access to education and training of the villagers to perform high skilled and high paying jobs, thus improving the growth and happiness index of the village. Our efforts start with inculcating pride in Jaunti, being proud of what we would have achieved, over time."

DrRaj's team said, "We must begin to 'think locally' and 'act globally'. We are developing and deploying a strategic solution that captures the cultural prospective of the region, protects underlying facts of economic development and paves the way for holistic development facilitating the needs of the future generations in the Jaunti village."

Mr. Sanjay Goel, the District commissioner, NW-Delhi & Mr. Anoop Thakur, SDM have also visited the village on a few occasions to participate in the Scope/Need analysis' exercise. They have assured the villagers about 'convergence of existing government schemes' to maximize the output of this effort.

The real solution lies in helping the local people acquire the basic skills and support necessary to participate in the modern global economy in a meaningful way. That might include creating (or working for) uniquely focused small businesses that leverage proven technologies for addressing pressing "commercial problems" in local neighborhoods, villages and small towns. The beauty of this bottom up strategy is that there can be thousands of solutions in simultaneous development almost immediately at very little cost, providing invaluable jobs and "lessons learned" for future localized development programs.

+++

All India confederation of SC/ST Organisations, Karnataka State Meeting

The All India confederation of SC/ST Organisations,Karnataka state Get-together meeting was held at Royal Orchids Hotel, Manipal centre,MG Road,Bangalore on 3rd April 2015. Dr Udit Raj, National Chairman, AICSO and H'ble MP inaugurated the meeting. Sri Karuppaiah,Gen.Secretary, AICSO, Tamilnadu State and Sri Kuleshwar Singh Sonkar, Karnataka State Adviser were Chief Guests on this occasion.

The meeting was started with a song on Baba Saheb Dr B R Ambedkar by Sri Channappa, Gen. Secretary, AICSO, Karnataka State.Sri Gajendran State vice president welcomed the gathering.

Dr Udit Raj in his inaugural speech said that government jobs were reducing very fast. In central government jobs were reduced from 30-40 lakhs to 20-22 lakhs. In public sectors like Coal India it has come down from 6 lakh to 3 Lakhs.For SC/ST's it is going to be a serious issue as their strength is coming down very fast.

Due to Liberalisation, Globalisation,and Privatisation Private sectors are developing very fast.but SC/ST's participation in LPG is very meagre and negligible.Due to privatisation we have to forget Government jobs and therefore we have to demand reservations in private sector also.As an employees representing these downtrodden communities we have to protest this injustice and protect our human rights. Only SC/ST employees can do this and fight for social justice.So we have to organise and work unitedly keeping away all other differences.

We can not depend on SC/ST politicians as they are depending on political parties led by high caste people.They only can do little and cannot even speak in Parliament about SC/ST's innumerous problems,

Now a days Baba Saheb Ambedkar is growing bigger and bigger all over India only because of SC/ST employees. Baba Saheb's ideology is based on social justice and humanitarian concept. One political party of SC/ST/OBC and minorities has come up in the Indian history and also came to power only with the backing of SC/ST/OBC employees. So our Confederation has got a major task of enrolling mass membership drive and get organised in a planned manner.

Now a days service sector is contributing major portion for our GDP along with agriculture sector which is about 16%. In IT sector which is also contributing more our SC/ST representation is almost nil. SCP and STP sub plans have not achieved their target and their funds were diverted. Dr Udit Raj said he had raised many questions in Parliament sessions and demanded more budgetory allocations for SC/ST sub plans. He also had demanded that all this funds should spent exclusively for SC/ST's development and not to be diverted for construction of roads and bridges. He Said that he had also strongly recommended government to increase the participation of SC/ST's in MSME sector, as there are lot of unregistered unitsof SC/ST's in leather and apparel industries.

Dr. Udit Raj at Karnataka State AICSO get- together

Sri Kuleshwar Singh Sonkar, State Adviser requested all AIOCSO Members to enroll more membership and work with active participation. Sri J Srinivasulu, State president, Karnataka state said that we are doing every effort to increase membership in many districts of Karnataka.Sri Channappa Gen.secretary, said that recently his Rail Coach factory and Southern Railways SC/ST's employees were taking active participation. Railways SC/ST's emloyees lead by Sri Prabhu Das and his team garlanded and felicitated Dr Udit Raj by putting Mysuru peta and a Shawl.

Sri Karuppaiah General secretary, Tamilnadu state had thanked Dr Udit Raj for taking the issue of heinious attrocity on Tamil youth by high castes in KrishnaGiri district by making him drink urine. He also thanked him for taking the issue of caste certificate problems faced by Tamil SC/ST's living in Delhi.

Sri Purushotham Das, Senior member and state adviser told that he will publish in kannada language about the issues taken by Dr Udit Raj in Parliament so that SC/ST employees and other SC/ST organisations in Karnataka should know about this. because other SC/ST MP's are doing nothing for the development of SC/ST's or raise any questions or problems concerning SC/ST's.

Sri A G Vivekananda,State organising secretary,Sri Rajendran, Sri Nagaraj State vice president, Sri Nagesh BBMP Bangalore, Sri Shanmugham,Smt Thilagavathy, Tamilnadu and many more activists participated in the discussion. Activists from many departments and fom different Organisations all over the state also Attended.

+++

DR.B.R.AMBEDKARS 124 BIRTH ANNIVERSARY DAY OBSEVED BY CONFEDERATION STATE UNIT IN TAMILNADU

All India Confederation of SC/ST organization Tamil Nadu unit celebrated 124 birth anniversary of Dr. B.R. Ambedkar at Cordite Factory Aruvankadu under the aegis of our affiliated unit Defence SC/ST Employees Welfare Association on 12.04.2015 at Cultural Hall,Cordite Factory,Aruvankadu, Niligiris district.

Dr.Udit Raj ex - IRS, Honorable MP (LS), Member-Parliamentary Standing Committee on Social Justice and Empowerment and National Chairman All India Confederation Of SC/ST Organizations was the chief guest of the function. Shri. K.K. Pati, General Manager Cordite Factory Aruvankadu presided over the function.Shri Sarmila Pati, President ,Deepshikha women's welfare association, Cordite Factory Aruvankaduas distributed prizes to the winners of different sports competition and functions arranged in commemoration of birth anniversary celebrations. The chief guest, the Honourable MP in his address threw light on the historic struggle of Dr. B.R. Ambedkar. He was speaking about the vision and mission of the first union legal minister of independent India said that the young generation in particular and the nation in general should follow his teachings in letter and spirit. He emphasized the important role to be played and the responsibility of every dalit leaders and members of dalit community. He stressed upon the need for reservation in promotion to SC/STs, need for filling of backlog vacancies and necessity to extend reservations in private sector. He elaborated about the discrimination faced by SC/STs in various sectors. He advised all the association members, dalit leaders of the association to ensure that every member of our community works with discipline and we should lead by example to society. Due to Constitutional provision for reservation in employment, we have got all the benefits. So we should not be a selfish person and we should pay back to the society. We should work hard to bring social changes among the down trodden community. He directed all the employees to follow the rules and regulation scruplessously without any deviation. Self discipline is very important amongst dalit leaders. The public property of the nation should be saved with utmost care. He appreciated the GM, cordite factory for the assurance given for solving the issues of CFA SC/ST EWA in letter and spirit with a short span of time and requested the CFA management for modernization of cordite factory proposals to take-up the issues with appropriate authority for future growth of this organization.Members of the audience said that it has been a great opportunity and honour to see a great personality in a small town. We were blessed by your presence in Cordite Factory,Aruvankadu. Your presence at Dr.Ambedkar's birthday celebration was very inspiring. The speech given by you was a very effective and admirable one. He spoke about a great personality and the Father of our Indian Constitution, who was a great National leader and worked day and night for the welfare of the country and the deprived classes, his greatness, his achievements and his life history. The points given by him on communalism was very effective and examples used to explain his view was very inspiring. The point about justice and community was very effective one. The examples that were given on justice was very heart touching one such as the difference between the rich and the poor and about social classes etc. the social hierarchies which existed from long back and till now, and also about the history of the deprived classes etc.,. He spoke about a person who died due to high sugar and high BP and thirst and who was unable to pay for his treatment was very heart touching one. K.K. Pati, General Manager addressing the audience said that Dr. B.R. Ambedkar always wanted people to come up in life. Inspiring the audience, he said where there is a will, there is a way. Shri. S. Karuppaiah, Confederation Tamilnadu State General Secretary and PR Media Co-ordinator, stressed the need for membership and affiliation and various activities carried out by confederation in Tamil Nadu to strengthen the confederation. Shri. M.P. Kumar, Confederation Tamilnadu State President &Convenor and vice president Shri. M. Mathiparayanar also addressed the gathering.On this occasion a grand cultural programme was arranged with the help of Toda and Kota Tribal Communities of the Nilgiris and Natyanjali School of Dance, Aruvankadtl.Among other dignitaries, Shri. N.K. Choudhary, Addl. General Manager, Members of Unions, Associations, Confederation Tamil Nadu state Office bearers such as A.C Srinivasan, AAI,Chennai,Tilagavathy ,Professor,Kings Institute,Chennai,shri.muthaiah and team FCT-Chennai,Shri Anbalagan and Team NLC,Neyvali, Officials from medicals store Chennai, postal department Nagalingam-Dindigul,Railway Kuppusami and Team,Jayachandran and Nagaraj EPFO Madurai and Asnathu Nisha Womens Wingand A Large Number Of Audience attended the function. Shri. S. Sendil Kumar, Chairman Dr, B.R. Ambedkar Birthday celebration committee presented the Welcome address and Shri. A. Vasantha Kumar Charles, President, Defence SC/ST Employees Welfare Association, CFA proposed the vote of thanks. Shri. M. Chandrasekaran, General Secretary, Defence SC/ST Employees Welfare Associatin: CFA received the dignitaries was seen fully engaged and committed with the Executive Committee members for the successful conduct of the function.

Dr. Udit Raj at Cordite Factory, Aruvankaduas

+++

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 18 ● Issue 10 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● 1 to 15 Apirl, 2015

AMBEDKARISM vs NATIONALISM

Dr. Udit Raj

Some people become important in their lifetime, some posthumously. Some gain familiarity during their life span and some thereafter. Dr. Ambedkar could not gain familiarity during his life time but steadily his height increased so much which could not be imagined some time before. Evaluation is done on the basis of one's works and philosophy despite the fact that famous people gained Nirvana after a long time. In a world of communication revolution there should not be any doubt in the mind of anybody that they will continue to be successful in future too on the strength of propaganda. So far selected class of people and the government had control over communication and it was possible to make a common man an important person and an important person a common man but it is not feasible now.

Outlook magazine, CNN-IBN and Nelson conducted a survey in August-September 2012 to know who the great person is after Gandhi ji. Selection process was in three stages – franchise, survey and opinion of the intellects. The final ranking of the survey conducted in three stages, which consisted of 28 Indian intellects, online franchise and missed calls, marketing research, etc., declared Dr. B.R. Ambedkar in the first place who scored 19,91,734 votes while Jawahar Lal Nehru got 9,921 votes, Lata Mangeshkar 11,520 votes, Valabhbhai Patel 5,58,835. Likewise, Dr. Abdul Kalam, Mother Teresa, G.R.D. Tata, Sachin Tendulkar, India Gandhi, et al. lagged much behind in this survey of top ten famous personalities. The day CNN-IBN was to declare the result, commentator and guest Rajdeep Sirdesai had invited personalities like Amitabh Bachchan who could not do proper evaluation. Had they invited at least one educated Dalit, he would have defined the rightful contribution of Dr. Ambedkar for which he was declared the winner. Amitabh Bachchan is not at fault for this since he had not read about the Dalit campaign nor had he participated in it. It is the mindset of the people that they felt pressurized not to invite any disciple of Dr. Ambedkar. All said that the had drafted the Indian Constitution which was a great contribution, which is not true. The biggest contribution of Dr. Ambedkar was to secure freedom for the Dalits from slavery and to establish an equitable society. This survey was neither covered by any electronic media or print media. If covered, the coverage was negligible which caused great torment amongst the Dalits.

Personality of Dr. Ambedkar has achieved such position that hardly any city or village remains untouched where his birthday is not celebrated. Now the Government is also encouraging such celebrations otherwise some time before only those people celebrated his birthday that had got respectable life because of his campaign. It is good that now non-Dalits are also celebrating his birthday. Now disciples of Dr. Ambedkar are expecting people of other Samaj respect for him. Not doing so creates vindictive feelings. We need to stop this trend lest it should become a culture that only those will celebrate the birthday of any famous leader in which caste he was born.

Proper evaluation of Dr. Ambedkar could not be done so far. Most of the non-Dalits think that he campaigned for the 'untouchables', which is not true. In 1951 Dr. Ambedkar did not resign from the post of Union Law Minister on the Dalit issue but on the issue of giving equal property rights to women. When he presented the Hindu Code Bill in consultation with Nehru ji, which provided equal rights to property to women and men. When most of the Members of Parliament opposed the Bill, Nehru ji withdrew his support. Under these conditions there was no question of passing of the said Bill. When the Bill could not be passed, Dr. Ambedkar resigned from Law Minister under duress. Did Women Lib advocates do justice to Dr. Ambedkar? Do the supporter of gender equality ever deliberate on this matter. All non-Dalit women were quite ignorant of this fact when I discussed this matter with them. Justice does not appear to be metted out Dr. Ambedkar. But this fact cannot remain hidden for long.

When Anna Hazare launched his campaign against corruption from Ram Lila Maidan, 'Bharat Mata Ki Jai' slogan vibrated in the air the most. It was a good thing. It is not that this slogan was not raised earlier. In Dalit meetings, no slogan like 'Bharat Mata Ki Jai' is raised. I was made to think if something is amiss? Is there something wrong which can be corrected? Some people might think these people raise the slogan 'Jai Bheem, Jai Bharat' but do not recite 'Bharat Mata Ki Jai'. In fact, 'Jai Bharat' and 'Bharat Mata Ki Jai' convey the same sense. The forces behind socialism talk of their own rights. Then it is pure nationalism. It makes 'unity in diversity' character of the nation more solid. Before Independence, while most parts of the country were enslaved, intruders did not feel much difficulty in winning the states. The main reason for enslavement was that the nation was divided in thousands of castes and every caste was concerned with its profession. If he was a Chamar he would work on led that, a barber would cut hair, washer man would wash clothes, and a Khatik would grow vegetables and pigsery, unaware of who was ruling the nation and who not. Only one caste was responsible for ruling, administering and protecting the country. Lessening of head counts of their caste did become one of the reasons of their defeat. Intruders did manage to unite other castes with them. These people either remained dormant or sided with the intruders. Therefore, caste-ism did play a major role in making the nation a country of slaves. Democracy and reservation did ensure participation of both genders and almost all the castes in the administration which made people aware of who is coming to power. Slavery vanished. Ambedkarism, social justice, respect and participation is the synonym of national 'unity in diversity'.

+++

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:
Five years : Rs. 600/-
One year : Rs. 150/-

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com
Computer typesetting by C. L. Maurya